International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 522-523

शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए मूल्यों प्रासंगिकता

अंजना बसेड़ा
शोधछात्रा, सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना
वर्तमान समय में अपराधों का ग्राफ दिनों दिन बढ़ता जा रहा है, शायद ही कोई इस दिन होता होगा जब समाचार पत्रों में हिंसा, अराजकता और भ्रष्टाचार की सुर्खिया मुख्य पृष्ठ पर न दिखाई देती हो। आज जीवन के सभी क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों की भारती कमी तथा वर्तमान समय में मूल्यों के संकट के कारण सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा में गुणात्मक सुधार तथा मूल्यपरक शिक्षा पर बल देने पर ज़ोर दिया जा रहा है। बिना मूल्यों के मनुष्य का व्यवहार निश्चित नहीं हो सकता, नियमित नहीं हो सकता, मनुष्य के आचार विचार को सही दिशा देने के लिए मूल्य शिक्षा की आवश्यकता होती है। आज भौतिकतावादी प्रवर्ति के कारण हमारे देश में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में ही मूल्य धीरे धीरे समाप्त होते जा रहे है। मूल्यों के ह्रास का अर्थ है समाज द्वारा स्वीकृत आदर्श एवं मानदण्डों को अन्तःकरण में न उतारना और उनके अनुसार आचरण न करना। आज समाज में साधारण आदमी की यह धारणा है कि मेहनतकश एवं ईमानदार व्यक्ति पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल–फूल रहे हैं, इस धारणा से समाज में न केवल नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। वरन् शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासनहीनता, श्रम के प्रति अनास्था, स्वकर्तव्य के प्रति उदासीनता बड़ी है।

यदि हम मानव सभ्यता व संस्कृति को सुरक्षित रखना चाहते है तो हमें मूल्यपरक शिक्षा पर बल देना होगा। डॉ. राधाकृष्णन के मतानुसार ''आधुनिक मानव ने पक्षी की तरह आकाश में उड़ना सीख लिया है, सागर में मछली की तरह तैरना सीख लिया है लेकिन पृथ्वी पर मनुष्य की तरह चलना भूल गया है, अर्थात मानव के जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि मानव जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से संबंधित होता है। मूल्य का अर्थ : मूल्य का शाब्दिक अर्थ है उपयोगिता, महतव और वांछनीयता। शाब्दिक अर्थ में मूल्य व्यक्ति के गुणों को महत्व देता है, जिससे व्यक्ति का महत्व बढ़ता है और समाज में उस व्यक्ति का आदर सम्मान होता है। यह गुण या विशेषता आंतरिक या बाह्य भी हो सकती है। व्यवहारिक दृष्टि से मनुष्य की इच्छायों की संतुष्टि को मूल्य की संज्ञा दी जाती है।

मूल्यों का दार्शनिक अथ्र – दार्शनिक अर्थापन में व्यक्ति को महत्व नहीं दिया जाता है अपितु विचारों एवं दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी जाती है। एक वस्तु किसी व्यक्ति के लिए उपयोगी हो सकती है परंतु यह आवश्यक नहीं है कि वही वस्तु दूसरे के लिए उपयोगी हो। उस व्यक्ति के लिए उस वस्तु का कोई मूल्य नहीं होगा। इस प्रकार दार्शनिक विचार एवं दृष्टिकोण का मूल्य से सीधा संबंध होता है। दर्शन की शाखाऐं तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा व अंतिम महत्वपूर्ण शाखा मूल्य मीमांसा का अध्ययन किया जाता है जो उन कसौटियों व सिद्धान्तों को स्पष्ट करती है जिसमें यह निश्चित किया जा सके की मानव व्यवहार में क्या अच्छा, कला में क्या सुन्दर है, सामाजिक व्यवस्था में क्या उचित है और अंत में वह क्या है जो इन सब में उपस्थित है और वह क्या है जो इन सब को एक दूसरे से भिन्न बताता है। इस प्रकार शिक्षा के लिए मूल्य मीमांशा का यह महत्व है कि वह उन मूल्यों की परख करे और उनको समाकलित करे जो इस शाखा के माध्यम से लोगों के जीवन में प्रवेश करती है।

मूल्यों का सामाजिक दृष्टिकोण : मूल्यों का विकास सामाजिक स्वरूप के अंतर्गत धीरे–धीरे समाज के सदस्यों की अंतः क्रिया से होता है। व्यक्ति को अपनी जीविका के लिए समस्याओं का सामना करना होता है, समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ उसे सहयोग करना तथा उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना होता है, अपनी संस्कृति के अनुरूप व्यवहार करना होता है। इस प्रकार बिना सामाजिक मूल्यों के सामाजिक प्राणी में शांति का अनुरक्षण करना सम्भव नहीं होगा। समाजशास्त्रियों ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य की अनेक आवश्यकता होती है, वह उनमें से कुछ का चुनाव करता है और ये उसके लिए लक्ष्य बन जाती है, लक्ष्यों में प्रतिस्पर्धा होती है, लक्ष्यों में जो सर्वोत्तम होता है वह उसका आदर्श बन जाता है। समाज इन आदर्शों स संबंधित आदर्शो, नियमों, विश्वासों, सिद्धान्तों अथवा सामाजिक मानदंडो का निर्माण करता है और जब यह आदर्श, नियम अथवा मानदंड समाज के सदस्यों के अंतःकरण में आतंरिक तत्वों का रूप धारण करते है तो इन्हें मूल्य कहा जाता है।

धर्मशास्त्र में नैतिक नियमों को मूल्य माना जाता है इसमें परिस्थितिक विषयक विशेषताएं जैसे शांति, सहभागिता, वफादारी, सहयोग, धार्मिकता, ईमानदारी तथा समाज के लिए आधारभूत मान्यताएँ जैसे – मानव जीवन की पवित्रता, उचित प्रक्रिया, सामान सुरक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता निहित है। प्रत्येक धर्म के कुछ नियम होते है और मनुष्य को उनका पालन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में करना होता है। जब यह नियम मनुष्य के व्यवहार को नियंत्रित एवं निर्देशित करने लगते है, तब ये उसके लिए मूल्य बन जाते है। जो प्रश्न उचित और चाहिए के होते है वह नैतिक प्रश्न है और वह नैति मूल्यों के संबंध में होते है। जो प्रश्न अच्छे–बुरे के सम्बंध में होते है वे सदैव नैतिक प्रश्न नहीं होते वरन वह किसी भी मूल्य के प्रकार के संबंध में सकते है।

इस प्रकार धार्मिक शास्त्रियों और समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण पर समग्र रूप से विचार करे तो यह निष्कर्ष निकलता है कि समाज के विश्वास आदर्श, सिद्धांत, नैतिक नियम व व्यवहार मानदंड जिन्हें समाज के व्यक्ति महत्व देते है और जिससे उनका व्यवहार नियंत्रित व निर्देशित होता है वह उस समाज व उस व्यक्ति के मूल्य होते है।

आज हमारे समाज में दिन प्रतिदिन मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है जिसके लिए हम तथा हमारा समाज ही जिम्मेदार है। हम भौतिकता की ओर इतना ज़्यादा आकर्षित हो रहे है कि हमारे जीवन में मूल्यों का ह्रास हो गया है। हम शांति, सहभागिता, वफादारी, सहयोग,

सुरक्षा ईमानदारी, आदि मूल्यों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं।
आज आवश्यकता है इन मूल्यों को जीवित रखने की, मूल्य शिक्षा की मुख्य पाठशाला तो घर ही है जहां औपचारिक व अनौपचारिक तरीके से वह सहज ही इस दिशा में संज्ञान हो जाता था। बड़े–बूढ़ां का सम्मान, संत महात्माओं के प्रति सेवा निष्ठा, पडोसी से भाईचारा, रोगी की देख रेख, गरीबो, दुखियों के प्रति उदारता, धर्म के प्रति अडिग आस्था, कर्म के प्रति पूज्य भाव, ये सभी गुण उसके आँगन में ही पोषित कर दिए जाते है।
आज समाज का हर प्रबुद्ध व्यक्ति मूल्यों के तीव्रतम ह्रास से चिंतित है वह चाहता है की मानव को इस चकाचोंद की दुनिया से निकल जाए, स्वार्थ पर निस्वार्थ की सीापना की जाए। इस प्रचार प्रसार में शिक्षा अहम भूमिका निभा सकती है। मूल्येां के विकास में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त माध्यम माना जाता है। व्यक्ति और समष्टि के ज्ञान को विद्या के माध्यम से बाल्यावस्था से युवाअवस्था शिक्षा तक नई पीढ़ी को प्रदान कर उन्हें देश व समाज के लिए हज़ारो वर्षों से शिक्षा का दायितव रहा है। भारत में इसकी शुरूआत गुरूकुल के रूप में देखी जा सकती है, जहा। शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक, शिक्षाकर्मी या व्याख्याता नहीं अपितु गुरू या ऋषि कहे जाते थे जो सव्यं ही मूल्यों का बोध कराते थे। आज जब हम कंम्पूयटर युग में जी रहे है प्रतिक्षण नए–नए आविष्कार और अनुसंधान हो रहे है। गुरूकुल पद्धति में वापस जाने की बात सोचना भी संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है की मूल्य शिक्षा के विकास हेतु आयोजित की जाने वाली क्रियाओं के क्रियान्वयन उपयुक्त शिक्षण विधियां प्रयुक्त की जाए तथा पाठ्यक्रम में कला, विज्ञान, संस्कृति आदि के प्रशिक्षण के साथ साथ देश व समाज की वर्तमान व्यापक समस्याओं पर चर्चा होनी चाहिए तथा अध्यापक इन सबके विकास में अग्रणी भूमिका निभाएं। लोक कथाओं के साथ हमारे ग्रंथों में बहुत सी बोध कथाएं व नीति कथाएं है जो हमें हमारे मूल्यों से अवगत करते हें उससे आनेवाली पीढ़ी को परिचित करना चाहिए। शिक्षक तथा अन्य अभिकर्ता इन क्रियाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखे और इनके सफल क्रियान्वयन हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान करे तभी विद्यालय मूल्यों के विकास में योगदान करने वाली सकारात्मक संस्थाओं की भूमिका का निर्वाह कर सकेंगे अन्यथा वे केवल किताबी शिक्षा प्रदान करने वाले केंन्द्र बनकर रह जाएगे।

संदर्भ

1. एस.एस. माथुर : शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. मेहंती मिश्रा और सक्सेना : अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. शिक्षा मित्र दिसंबर 2010 शिक्षक शिक्षा
4. शिक्षा मित्र दिसंबर 2010 संस्कृति और शिक्षा
5. शिक्षा मित्र मार्च 2011 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता
6. आर.ए. शर्मा : मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर लाल बुक डिपो मेरठ
7. डॉ. रामशकल पांडेय : मूल्य शिक्षा के परिपेक्ष्य